# इकाई 11 भारतीय राष्ट्रीय भावना और स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन

**इकाई की रूपरेखा**


11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 प्राचीन भारत में राष्ट्रीय भावना का उदय

11.3 आधुनिक भारत में राष्ट्रीय भावना का उदय

11.4 भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

11.5 भारत में स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन

11.5.1 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम

11.5.2 असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह

11.5.3 भारत छोड़ो आन्दोलन

11.6 सारांश

11.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर


## 11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- भारतीय राष्ट्रीय भावना के उदय के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारणों को जानेंगे।
- ब्रिटिश शासन के कुप्रभावों को जानेंगे।
- धार्मिक और सामाजिक सुधार आन्दोलनों के विषय में जानेंगे।
- ब्रिटिश शासन विरोधी प्रारम्भिक आन्दोलनों के विषय में जानेंगे।

## 11.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येता! भारतीय राष्ट्रीय भावना और स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन परस्पर सम्बन्धित हैं। भारतीय राष्ट्रीय भावना विशेष रूप से उन गुणों, मूल्यों और धारणाओं का संयोजन है जो हमें एक साथ रहने और प्रगति करने के लिए एकजुट करते हैं। यह भावना हमें सामाजिक समरसता, विविधता, और सांस्कृतिक समृद्धि की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भारतीय राष्ट्रीय भावना में सामाजिक न्याय, समरसता, और एकता के मूल तत्त्व सम्मिलित हैं। यह हमें अपने देश के प्रति समर्पित और संवेदनशील बनाती है, साथ ही अपने समाज के सभी वर्गों और समुदायों के प्रति समर्पित रहने को प्रेरित करती है। भारतीय राष्ट्रीय भावना भारतीय

संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत, और समृद्ध विचारधारा को अभिव्यक्त करती है, जो हमें अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान अनुभव कराती है। इसके साथ ही, यह हमें भारतीय समाज के न्याय, स्वतंत्रता, और स्वाभिमान की महत्ता को समझाती है। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय भावना हमें एक राष्ट्र के रूप में एकजुट होने और सामुहिक संघर्षों को पार करने के लिए प्रेरित करती है।

स्वतन्त्रता संग्राम की बात करें तो भारत का स्वतंत्रता संग्राम 18वीं शताब्दी के अंत से लेकर 1947 तक चला एक लंबा और जटिल संघर्ष था, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त करना था। इस आंदोलन में विभिन्न विचारधाराओं, नेताओं और रणनीतियों का समावेश था, जिसने भारत को एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र में बदल दिया। **इसकी पृष्ठभूमि** 17वीं शताब्दी से आरम्भ होती है जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में व्यापारिक चौकियां स्थापित कीं। धीरे-धीरे, कंपनी ने अपनी राजनीतिक शक्ति का विस्तार किया और 19वीं शताब्दी तक पूरे भारत पर शासन करने लगी। ब्रिटिश शासन ने भारत पर भारी आर्थिक बोझ डाला, सामाजिक संरचनाओं को बाधित किया और भारतीय संस्कृति और परंपराओं को कमजोर किया। इन कारकों ने धीरे-धीरे भारतीयों में असंतोष और विद्रोह की भावना पैदा कर दी जो आगे चलकर आन्दोलनों में बदल गया ।

## 11.2 प्राचीन भारत में राष्ट्रीय भावना का उदय

भारतीय राष्ट्रीय भावना के सन्दर्भ में कई पश्चिमी विद्वानों की यह धारणा है कि ब्रिटिश शासन के कारण ही भारत में राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न हुई। उनका मानना है कि राष्ट्रीय चेतना ब्रिटिश शासन की एक परिणति है और इससे पहले भारतीय लोग राष्ट्रवाद के प्रति असज्जित थे। परंतु यह सत्य नहीं है।

वास्तव में, भारत में राष्ट्रीय चेतना वैदिक काल से है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में भूमि को माता मानकर उसकी महिमा का गान है, जिसमें कहा गया है, **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"**। विष्णु पुराण में राष्ट्र के प्रति श्रद्धाभाव का स्पष्ट उल्लेख है, इसमें भारत का यशोगान 'पृथ्वी पर स्वर्ग' के रूप में किया गया है।[1]

**अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महागने।**
**यतोहि कर्म भूरेषा ह्यतोऽन्या भोग भूमयः॥**

**गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत-भूमि भागे।**
**स्वर्गापस्वर्गास्पदमार्गे भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥**

वायु पुराण में भारत को एक अद्वितीय कर्मभूमि के रूप में बताया गया है। भागवत पुराण में भारतवर्ष को सम्पूर्ण विश्व में "सबसे पवित्र भूमि" कहा गया है। इस पवित्र भारतवर्ष पर देवता भी जन्म लेने की इच्छा रखते हैं, ताकि वे सत्कर्म करके वैकुण्ठ प्राप्त कर सकें।

"कदा वयं हि लप्स्यामो जन्म भारत-भूतले, कदा पुण्येन महता प्राप्यस्यामः परमं पदम्"।

[1] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6

महाभारत के भीष्म पर्व में भारतवर्ष की महिमा का गान यौगिक रूप से किया गया है, जिसमें कहा गया है, **"अत्र ते कीर्तिष्यामि वर्ष भारत भारतम्, प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनोवैवस्वतस्य, अन्येषां च महाराजक्षत्रियारणां बलीयसाम्, सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारताम्"।**

गरुड पुराण में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की आकांक्षा का वर्णन कुछ इस प्रकार है, **"स्वाधीन वृत्तः साफल्यं न पराधीनवृत्तिता, ये पराधीनकर्माणो जीवन्तोऽपि ते मृताः"।**

रामायण में रावण के वध के बाद राम लक्ष्मण से कहते हैं, **"अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"।**

तो इस प्रकार हम देख सकते हैं कि राष्ट्रवाद की भावना आरम्भ से ही भारतीयों के हृदय में विद्यमान थी।

**बोध प्रश्न - 1**

1. भारत में राष्ट्रीय चेतना कब से है ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. भूमि को माता मानकर उसकी महिमा का गान किस वेद में है ?

   ……..

   ……..

   ……..

3. किस पुराण में भारतवर्ष को सम्पूर्ण विश्व में "सबसे पवित्र भूमि" कहा गया है ?

   ……..

   ……..

   ……..

4. "अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" रामायण में यह किसकी उक्ति है ?

   ……..

   ……..

   ……..

## 11.3 आधुनिक भारत में राष्ट्रीय भावना का उदय

प्रिय अध्येता! आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का उदय 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में हुआ। इसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का मिश्रण सम्मिलित था। 18वीं शताब्दी के अंत में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया

कंपनी ने भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया था। ब्रिटिश शासन के दौरान, भारत में कई नकारात्मक बदलाव हुए, जैसे:

- **आर्थिक शोषण:** ब्रिटिश शासन ने भारत की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया और भारतीयों का जीवन स्तर गिर गया।
- **सामाजिक भेदभाव:** ब्रिटिश लोगों ने भारतीयों के साथ भेदभाव किया और उन्हें नीचा दिखाया।
- **राजनीतिक दमन:** ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता को छीन लिया और उन्हें अपने शासन के अधीन रखा।
- ब्रिटिश शासन के इन बदलावों के कारण भारतीय समाज में कई परिवर्तन आए, जैसे:
- **पश्चिमी शिक्षा का प्रसार:** पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों में आधुनिक विचारों और मूल्यों का प्रसार हुआ।
- **सामाजिक सुधार आंदोलन:** 19वीं शताब्दी में भारत में कई सामाजिक सुधार आंदोलन हुए, जिन्होंने जातिवाद, छुआछूत और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- **राष्ट्रीय चेतना का उदय:** इन परिवर्तनों ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का उदय किया और उन्हें अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

इसके साथ ही पश्चिमी विचारों, जैसे स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र ने भारतीयों को प्रेरित किया और उन्हें अपने देश के लिए स्वतंत्रता की मांग करने के लिए प्रेरित किया। 19वीं शताब्दी में, भारतीयों ने अपनी संस्कृति और परंपराओं में रुचि लेना शुरू कर दिया, जिसने राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया।

**बोध प्रश्न - 2**

1. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कब भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया था?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

2. ब्रिटिश सरकार की कौनसी नीतियों ने भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाओं को जन्म दिया ?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

## 11.4 भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

प्रिय विद्यार्थियो! यह सच है कि भारत में राष्ट्रवादी विचारधारा का बीज सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से ही बोया जा चुका था। धीरे-धीरे यह विकसित होता रहा और 1857 ईस्वी में इसने पूर्ण क्रांति का रूप ले लिया। इसलिए, 19वीं शताब्दी के मध्य को भारतीय राष्ट्रीय जागृति का काल मानना उचित होगा।

भारत में राष्ट्रवाद का उदय विश्व में एक अनूठा घटनाक्रम था। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक और धार्मिक सुधारों का भी आह्वान करता था।

- **सामाजिक-धार्मिक सुधारों की भूमिका:**
  - वास्तव में, सामाजिक और धार्मिक जागृति ने ही राजनीतिक जागृति का मार्ग प्रशस्त किया।
  - राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानंद जैसे सामाजिक सुधारकों ने जातिवाद, छुआछूत, सती प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई।
  - इन सुधारों ने भारतीयों में एक समान राष्ट्रीय पहचान विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **आध्यात्मिक पुनर्जागरण:**
  - डॉ. जकारिया के कथन के अनुसार, भारत का पुनर्जागरण मुख्य रूप से आध्यात्मिक था। इसने राजनीतिक उद्धार के आंदोलन का रूप धारण करने से पहले ही अनेक धार्मिक और सामाजिक सुधारों का सूत्रपात किया।

**भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और विकास के कारण:**

- **ब्रिटिश शासन के नकारात्मक प्रभाव:**
  - ब्रिटिश शासन ने भारत पर भारी आर्थिक बोझ डाला, सामाजिक संरचनाओं को बाधित किया और भारतीय संस्कृति और परंपराओं को कमजोर किया।
  - इन कारकों ने धीरे-धीरे भारतीयों में असंतोष और विद्रोह की भावना पैदा कर दी।
- **पश्चिमी शिक्षा और विचारों का प्रभाव:**
  - पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों में स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रवाद जैसी अवधारणाओं का प्रसार हुआ।
  - इससे उन्हें अपनी स्थिति पर गौर करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त करने की प्रेरणा मिली।
- **भारतीय संस्कृति और परंपराओं का पुनरुत्थान:**
  - 19वीं शताब्दी में, भारतीयों ने अपनी संस्कृति और परंपराओं में रुचि लेना शुरू कर दिया, जिसने राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया।
  - इसने उन्हें अपनी पहचान पर गर्व करने और एकजुट होने के लिए प्रेरित किया।

- **धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन:**
  - 19वीं शताब्दी में भारत में कई धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन हुए, जिन्होंने जातिवाद, छुआछूत और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
  - इन आंदोलनों ने भारतीयों में एक समान राष्ट्रीय पहचान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **आर्थिक शोषण:**
  - ब्रिटिश सरकार ने भारत के संसाधनों का शोषण किया और भारतीयों को गरीब बना दिया।
  - इससे भारतीयों में भारी आक्रोश पैदा हुआ और उन्होंने ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त करने का संकल्प लिया।
- **राजनीतिक दमन:**
  - ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता को छीन लिया और उन्हें अपने शासन के अधीन रखा। इससे भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाएं उभरीं और उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए संघर्ष आरम्भ कर दिया।

**बोध प्रश्न - 3**

1. किस काल को भारतीय राष्ट्रीय जागृति का काल माना जाता है ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और विकास के कारण क्या थे ?

   ……..

   ……..

   ……..

## 11.5 भारत में स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ऐतिहासिक घटनाओं की एक शृंखला थी जिसका अंतिम उद्देश्य ब्रिटिश शासन से मुक्ति प्राप्त करना था। यह एक लंबा और कठिन संघर्ष था जिसमें लाखों भारतीयों ने बलिदान दिया। भारत में स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन का आरम्भ 1857 के विद्रोह से हुआ।

### 11.5.1 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम

1857 का विद्रोह, जिसे सिपाही विद्रोह, प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। यह विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ भारतीय सैनिकों और नागरिकों द्वारा शुरू किया गया

था। यह विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ में मंगल पांडे नामक एक सिपाही द्वारा शुरू किए गए विद्रोह से शुरू हुआ था। दो साल तक चले इस विद्रोह ने पूरे भारत में फैलकर ब्रिटिश शासन को हिलाकर रख दिया। 1857 के विद्रोह के कई कारण थे, जिनमें प्रमुख हैं:

- **लॉर्ड डलहौजी की "राज्य हड़प नीति":** लॉर्ड डलहौजी ने अपनी "राज्य हड़प नीति" के तहत कई रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था।
- **लॉर्ड वेलेजली की "सहायक संधि":** लॉर्ड वेलेजली ने "सहायक संधि" के माध्यम से कई रियासतों को ब्रिटिश नियंत्रण में ला दिया था।
- **सैनिकों को चर्बी युक्त कारतूस का उपयोग करने पर बाध्य करना:**
  - ब्रिटिश सेना ने सैनिकों को नई एनफील्ड राइफल के लिए गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूस का उपयोग करने का आदेश दिया था।
  - यह हिंदू और मुस्लिम सैनिकों के लिए धार्मिक रूप से आपत्तिजनक था।

10 मई 1857 को मेरठ में मंगल पांडे के विद्रोह के बाद, विद्रोह पूरे भारत में फैल गया। दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झांसी और मेरठ जैसे शहरों में विद्रोहियों ने ब्रिटिश सेना का मुकाबला किया। नाना साहिब, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, मंगल पांडे, बख्त खान, बेगम हजरत महल जैसे वीर योद्धाओं ने विद्रोह का नेतृत्व किया। दो साल तक चले संघर्ष के बाद, ब्रिटिश सेना ने विद्रोह को दबा दिया। हजारों विद्रोहियों को फांसी पर लटका दिया गया और कई लोगों को निर्वासित कर दिया गया। विद्रोह के बाद, ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपने शासन को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए। 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाई और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। यह विद्रोह भारत के इतिहास में वीरता और बलिदान की गाथा है। 1857 का विद्रोह भले ही असफल रहा हो, लेकिन इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की नींव रखी।[2]

**अभ्यास प्रश्न - 1**

1857 के विद्रोह पर संक्षिप्त में एक निबन्ध लिखिए।

……..

……..

……..

……..

……..

……..

……..

[2] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A4%BE_%E0%A4%86%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A4%A8

## 11.5.2 असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह महत्त्वपूर्ण मोड़ थे। यह आंदोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1920 और 1930 के दशक में चला था। इसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग न करके स्वतंत्रता प्राप्त करना था।

**असहयोग आंदोलन:**

1 अगस्त 1920 को महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के साथ सभी स्तरों पर सहयोग समाप्त करना था। इसमें सरकारी नौकरियों, शिक्षा संस्थानों, अदालतों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना शामिल था। असहयोग आंदोलन के दो चरण थे:

- **पहला चरण (1921-1924):**
  - इस चरण में, आंदोलन शांतिपूर्ण तरीके से चला और इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।
  - चौरी-चौरा हत्याकांड के बाद गांधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया।
- **दूसरा चरण (1930-1931):**
  - नमक सत्याग्रह के साथ इस चरण की शुरुआत हुई।
  - इस चरण में आंदोलन अधिक तीव्र हो गया और इसमें कई हिंसक घटनाएं हुईं।

**नमक सत्याग्रह:**

12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी और उनके अनुयायियों ने दांडी से समुद्र तट तक 388 किलोमीटर की यात्रा करके नमक बनाया। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए नमक कर कानून का उल्लंघन था। नमक सत्याग्रह पूरे भारत में फैल गया और इसने लाखों लोगों को प्रेरित किया। हालांकि असहयोग आंदोलन को पूरी तरह से सफल नहीं माना जाता है, लेकिन इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाई और उन्हें स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। नमक सत्याग्रह ने भारत में गांधीजी को एक राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया। यह आंदोलन अहिंसा और सविनय अवज्ञा के सिद्धांतों पर आधारित था। इस आंदोलन में लाखों लोगों ने भाग लिया, जिसमें महिलाएं, किसान, छात्र और मजदूर शामिल थे। इसने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाई और उन्हें स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण मोड़ थे। इन आंदोलनों ने भारतीयों को एकजुट किया और उन्हें स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

**अभ्यास प्रश्न - 2**

असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखें ।

……..

……..

……..

### 11.5.3 भारत छोड़ो आन्दोलन

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारत छोड़ो आंदोलन एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। यह आंदोलन 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन से तत्काल और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, भारत में राष्ट्रवादी भावनाएं भड़क उठी थीं। भारतीयों का मानना था कि ब्रिटेन को युद्ध में उनकी मदद करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार ने युद्ध के दौरान भारत में कई प्रतिबंधात्मक नीतियां लागू की थीं, जिससे लोगों में असंतोष बढ़ गया था। 8 अगस्त 1942 को बॉम्बे में एक ऐतिहासिक सभा में, महात्मा गांधी ने अपना प्रसिद्ध "करो या मरो" का भाषण दिया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से "भारत छोड़ो" की मांग की। इस भाषण ने पूरे भारत में राष्ट्रवादियों को प्रेरित किया और भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत हुई। भारत छोड़ो आंदोलन पूरे भारत में फैल गया। लाखों लोगों ने इसमें भाग लिया, जिसमें छात्र, किसान, मजदूर और महिलाएं शामिल थीं। आंदोलनकारियों ने हड़ताल, प्रदर्शन, और सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया। ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए कड़ी कार्रवाई की। हजारों आंदोलनकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया, कई लोगों को गोली मार दी गई, और सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हालांकि भारत छोड़ो आंदोलन को तुरंत सफलता नहीं मिली, लेकिन इसने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया। यह स्पष्ट हो गया था कि भारत अब ब्रिटिश शासन के अधीन रहना नहीं चाहता था। युद्ध के बाद, ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने का फैसला किया। भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। इसने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना और एकता की भावना को मजबूत किया। यह आंदोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व और अहिंसा के सिद्धांतों का प्रतीक है। भारत छोड़ो आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐतिहासिक अध्याय है।

**अभ्यास प्रश्न - 3**

भारत छोड़ो आन्दोलन की महत्ता को अपने शब्दों में लिखें ।

……..

……..

……..

……..

……..

## 11.6 सारांश

प्रिय अध्येताओ! इस इकाई में, हमने भारतीय राष्ट्रीय भावना और स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के बारे में अध्ययन किया। हमने प्राचीन भारत में राष्ट्रीय भावना के उदय, आधुनिक भारत में राष्ट्रीय भावना के उदय, भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों, भारत में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के प्रमुख चरणों, और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं और घटनाओं के बारे में जाना।

## 11.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें


- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक), डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020
- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, नई दिल्ली, 1983
- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रामधारी सिंह 'दिनकर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1957.
- राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
- राजनैतिक सिद्धान्त और शासन, डॉ. कृष्णकान्त मिश्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. अनूपचन्द कपूर, प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1966.


## 11.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न - 1 के उत्तर**

1. वैदिक काल से
2. अथर्ववेद में
3. भागवत पुराण में
4. भगवान् श्री राम की

**बोध प्रश्न - 2 के उत्तर**

1. 18वीं शताब्दी के अंत में।
2. विभाजनकारी नीतियां, आर्थिक शोषण, राजनीतिक दमन।

**बोध प्रश्न - 3 के उत्तर**

1. 19वीं शताब्दी के मध्य काल को।
2. ब्रिटिश शासन के नकारात्मक प्रभाव, पश्चिमी शिक्षा और विचारों का प्रभाव, भारतीय संस्कृति और परंपराओं का पुनरुत्थान, धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन, आर्थिक शोषण, राजनीतिक दमन।

**अभ्यास प्रश्न - 1 का उत्तर**

इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

**अभ्यास प्रश्न - 2 का उत्तर**

इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

**अभ्यास प्रश्न - 3 का उत्तर**

इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।